शल्य तंत्र – 01

अस्थिभग्न पर अस्थिसंधानक लेप की कार्मुकता का अध्ययन

अध्येता : डा. भवानीशंकर शर्मा

निर्देशक : प्रो. बी.एन. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. हेमन्त कुमार कुशवाह

वर्ष : 1991

अस्थिभग्न पर अस्थिसंधानक लेप (कल्पित योग) की कार्मुकता का अध्ययन करना ही इस महानिबन्ध का उद्देश्य है।

कार्य योजनान्तर्गत 87 आतुरों का चयन कर 2 वर्गों में विभक्त किया गया। वर्ग 'अ' में 56 आतुर रखे गए तथा इन आतुरों के भग्नांग पर अस्थिसंधानक लेप (घटक द्रव्य – तिल तैल, अर्क पत्र, लवंग, अफीम, अर्जुनत्वक् एवं कट्फल) का प्रयोग किया गया। वर्ग 'ब' में 31 आतुर रखे गए तथा इन आतुरों पर अस्थिसंधानक लेप का प्रयोग नहीं किया गया। दोनों ही वर्गों में भग्न को सही स्थिति में स्थापित कर भग्न स्थिरीकरण किया गया। वर्ग 'अ' में भग्न पर अस्थिसंधानक लेप का स्थानिक प्रयोग 7–7 दिन के अंतर पर किया गया। प्रयोग की अवधि 'अ' वर्ग में औसतन 30.89 दिन तथा 'ब' वर्ग में औसतन 46.61 दिन रही ।

परिणामस्वरुप प्रथम 'अ' वर्ग एवं द्वितीय 'ब' वर्ग में लाभ क्रमशः 78.55 प्रतिशत एवं 64.30 प्रतिशत रहा। द्वितीय वर्ग की अपेक्षा प्रथम वर्ग में Callus निर्माण अधिक हुआ एवं भग्न के लक्षणों का भी अधिक शमन हुआ।

शल्य तंत्र – 02

मूत्रवहस्रोतोगत अश्मरी पर वरूणाद्य लौह का प्रभावात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. हीरालाल चौबीसा

निर्देशक : डा. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. एस.एस. शर्मा

वर्ष : 1992

वरुणाद्य लौह (भै.र. अश्मरी चिकि. प्रकरण/10–13) के अश्मरी भेदक प्रभावों का अध्ययन शास्त्रसम्मत विधि द्वारा करना इस महानिबन्ध का उद्देश्य है।

कार्य योजनान्तर्गत 20 आतुरों का चयन कर 2 वर्गों में विभक्त किया गया । जिनमें अश्मरी रोग के शास्त्र निर्दिष्ट लक्षण पूर्ण रुप से नहीं मिले किन्तु अश्मरी X-ray में दृष्टिगत हुई, उन 10 आतुरों को वर्ग 'अ' में रखा गया । वर्ग 'ब' में भी 10 आतुर रखे गए । इस वर्ग में उन आतुरों को रखा गया जिनमें शास्त्र निर्दिष्ट लक्षण पूर्ण रुप से विद्यमान पाए गए, किन्तु X-ray में अश्मरी दृष्टिगत नहीं हुई। दोनों वर्गों के आतुरों को वरुणाद्य लौह 500 मि.ग्रा. की 2–2 वटी का प्रातः, मध्यान्ह, सायं उष्णजल से 45 दिनों तक सेवन करवाया गया ।

चिकित्सा लाभ – अलाभ का आधार निम्न बिंदुओं के अनुसार रखा गया – पूर्ण लाभ उन्हीं आतुरों में माना गया जिनमें लक्षणों का शमन 76 – 100 प्रतिशत पाया गया साथ ही चिकित्सा पश्चात् के X-ray में अश्मरी दृष्टिगत नहीं हुई । मध्यम लाभ उन आतुरों में माना गया जिनमें लक्षणों का शमन 51–75 प्रतिशत पाया गया एवं X-ray में अश्मरी के आकार में पूर्वापेक्षा कमी आई साथ ही 'अ' वर्ग के उन आतुरों को इसी वर्ग में रखा गया जिनमें लक्षणों का शमन 76–100 प्रतिशत पाया गया किन्तु X-ray में अश्मरी के आकार में पूर्वापेक्षा कमी आई । आंशिक लाभ उन आतुरों में माना गया जिनमें लक्षणों का शमन 26–50 प्रतिशत रहा । 25 प्रतिशत से कम लाभ की स्थिति में रोगियों को अलाभ की स्थिति में रखा गया ।

परिणामस्वरुप वर्ग 'अ' में 40 प्रतिशत आतुरों को पूर्ण लाभ व 60 प्रतिशत आतुरों को मध्यम लाभ तथा वर्ग 'ब' के सभी 10 आतुरों में लक्षणों का पूर्णशमन अर्थात् 100 प्रतिशत लाभ हुआ ।

शल्य तंत्र – 03

अस्थिभग्न पर लाक्षादि गुग्गुलु की कार्मुकता का अध्ययन

अध्येता : डा. बालगोविन्द गुप्ता

निर्देशक : डा. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. मुकुट शर्मा

वर्ष : 1992

अस्थिभग्न में लाक्षादि गुग्गुलु (चक्रदत्त, भग्नचिकित्सा/12–14) की कार्मुकता का अध्ययन करना इस महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

इस अध्ययन हेतु 30 आतुरों का चयन कर चिकित्सार्थ रोगियों को दो वर्गों में विभक्त किया गया। दोनों वर्गों में भग्नस्थिरीकरण किया गया । वर्ग 'क' के 16 रोगियों को लाक्षादि गुग्गुलु से पूरित 2 कैप्सूल (500 मि.ग्रा. प्रति कैप्सूल) का दिन में 3 बार यथा सम्भव दुग्ध अथवा जल से प्रयोग कराया गया एवं वर्ग 'ख' के 14 रोगियों को कन्ट्रोल वर्ग के रुप में शर्करापूरित कैप्सूल का प्रयोग किया गया । रोगी के बलानुसार लाक्षादि गुग्गुलु वर्ग 'क' के रोगियों को 30–45 दिन तक सेवन करवाई गई ।

वर्ग 'क' में 81.25 प्रतिशत रोगियों को उत्तम लाभ एवं 18.75 प्रतिशत रोगियों को सामान्य लाभ रहा । वर्ग 'ख' में उत्तम लाभ 50 प्रतिशत रोगियों को तथा 42.86 प्रतिशत रोगियों को सामान्य लाभ तथा 7.14 प्रतिशत रोगियों को आंशिक लाभ रहा ।

शल्य तंत्र – 04

अर्धावभेदक में कुंकुंम नस्य एवं पथ्यादि कषाय का चिकित्सात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. सहदेव आर्य

निर्देशक : डा. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. एच.के. कुशवाह

वर्ष : 1994

इस महानिबन्ध का उद्देश्य अर्धावभेदक में कुंकुंम नस्य (चक्रदत्त, शिरोरोगचिकित्सा/40) एवं पथ्यादि कषाय (योगरत्नाकर, शिरोरोगचिकित्सा) का चिकित्सात्मक अध्ययन करना है ।

कार्य योजनान्तर्गत 45 आतुरों का चयन कर तीन वर्गों में विभक्त किया गया । प्रत्येक वर्ग में 15–15 रोगी रखे गए । वर्ग 'अ' में पथ्यादि कषाय एवं कुंकुंम नस्य का प्रयोग किया गया । वर्ग 'ब' में कुंकुंम नस्य का प्रयोग किया गया । वर्ग 'स' में पथ्यादि कषाय का प्रयोग किया गया । प्रत्येक रोगी को 30 दिन की चिकित्सावधि में रखा गया । पथ्यादि कषाय 25 मि.लि. दिन में 2 बार (प्रातः सायं) व कुंकुंम नस्य 2–2 बूंद दिन में 2 बार दिया गया।

परिणामस्वरुप वर्ग 'अ' में 73.33 प्रतिशत रोगियों को, वर्ग 'ब' में 13.33 प्रतिशत रोगियों को तथा वर्ग 'स' में 53.33 प्रतिशत रोगियों को लाभ मिला ।

शल्य तंत्र – 05

विचर्चिका रोग में जलौकावचारण का चिकित्सात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. मिलिन्द एन. सूर्यवंशी

निर्देशक : डा. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. एम.के. श्रृंगी

वर्ष : 1994

विचर्चिका रोग में जलौकावचारण की कार्मुकता का अध्ययन करना ही इस महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

कार्य योजनान्तर्गत 40 आतुरों का चयन कर 4 वर्ग बनाए गए । वर्ग 'अ' में जलौकावचारण, वर्ग 'ब' में औषधि (कैशोर गुग्गुलु), वर्ग 'स' में दोनों का तथा वर्ग 'द' में Placebo का प्रयोग किया गया । कैशोर गुग्गुलु (भावप्रकाश, म.ख. 54/73) की 2–2 गोली दिन में 3 बार अनुष्ण जल से दी गई तथा जलौकावचारण रोगी के व्याधित प्रदेश में प्रति सप्ताह एक बार किया गया । चिकित्सावधि 4 सप्ताह रखी गई।

परिणामस्वरुप रक्तमोक्षण व कैशोर गुग्गुलु का प्रयोग किए गए वर्ग में लक्षणों का शमन सर्वाधिक हुआ । वर्ग 'अ' में औसत लाभ 66.13 प्रतिशत, वर्ग 'ब' में औसत लाभ 40.72 प्रतिशत, वर्ग 'स' में औसत लाभ 76.58 प्रतिशत तथा वर्ग 'द' में औसत लाभ 32.68 प्रतिशत रहा ।

शल्य तंत्र – 06

अर्श चिकित्सा में क्षारसूत्र एवं बैण्डलाइगेशन का कर्मात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. संजय श्रीवास्तव

निर्देशक : डा. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. एच.के. कुशवाह

वर्ष : 1994

अर्श की चिकित्सा में क्षारसूत्र एवं बैंडलाइगेशन का तुलनात्मक अध्ययन ही इस महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

कार्य योजनान्तर्गत 20 आतुरों का चयन कर 2 वर्गों 'अ' एवं 'ब' में विभक्त किया गया । वर्ग 'अ' में क्षारसूत्र (चक्रदत्त 5/148) 10 रोगियों पर तथा वर्ग 'ब' के 10 रोगियों के अर्शांकुरों पर बैंडलाइगेशन किया गया। चिकित्सावधि 8 सप्ताह रखी गई।

परिणामस्वरुप वर्ग 'अ' में वर्ग 'ब' से ज्यादा उपद्रव मिले । वर्ग 'अ' में अर्श कटने का समय 4–7 दिन रहा जबकि वर्ग 'ब' में अर्शांकुर कटने का समय 8–11 दिन रहा । फालोअप अध्ययन में वर्ग 'अ' के रोगियों में सभी रोगी व्रण मुक्त एवं अर्शांकुर मुक्त थे तथा वर्ग 'ब' के 6 रोगियों में एक पतली सी सूत्र जैसी रचना देखने को मिली एवं अर्शरोग लक्षण जैसे–गुदा से रक्तस्राव आदि की प्रवृत्ति मिली । इस प्रकार वर्ग 'अ' के सभी रोगियों को लाभ मिला, जबकि वर्ग 'ब' के 40 प्रतिशत रोगियों को ही लाभ मिला ।

शल्य तंत्र – 07

अधिमन्थ रोग में रक्तमोक्षण की कार्मुकता

अध्येता : डा. बलजीत सिंह दाबास

निर्देशक : डा. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. सुभाष शर्मा

वर्ष : 1995

अधिमन्थ रोग में रक्तमोक्षण की कार्मुकता का अध्ययन करना इस महानिबन्ध का उद्देश्य है।

कार्य योजनान्तर्गत 20 आतुरों का चयन कर दो वर्गों 'अ' एवं 'ब' में विभक्त किया गया । प्रत्येक वर्ग में 10 रोगी रखे गए । वर्ग 'अ' को Pilocarpine 2 प्रतिशत का दिन में तीन बार तथा Timilol 0.5 प्रतिशत का दिन में 2 बार प्रातः सायं स्थानिक प्रयोग कराया गया। वर्ग 'ब' में अपांग प्रदेश में जलौका द्वारा रक्तमोक्षण कराया गया । जलौकावचारण प्रति 7 दिन पर 4 सप्ताह तक किया गया । वर्ग 'अ' को कंट्रोल ग्रुप की तरह रखा गया ।

परिणामस्वरुप नेत्रशूल, दृष्टि, स्राव, वर्ण, आध्मान एवं वर्त्म के लक्षणों में वर्ग 'अ' में क्रमशः लाभ 94.74 प्रतिशत, 47.37 प्रतिशत, 100 प्रतिशत, 91.66 प्रतिशत, 91.66 प्रतिशत एवं 90 प्रतिशत रहा। उपरोक्त इन्हीं लक्षणों में वर्ग 'ब' में लाभ क्रमशः 78.94 प्रतिशत, 62.50 प्रतिशत, 70 प्रतिशत, 36.36 प्रतिशत, 75.00 प्रतिशत, 66.66 प्रतिशत रहा । उपशय प्राप्त लक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर दृष्टि को छोडकर शेष लक्षणों में वर्ग 'अ' अधिक लाभकारी रहा । वर्ग 'ब' में दृष्टि ह्रास में वर्ग 'अ' की तुलना में अधिक लाभ हुआ । जलौका द्वारा रक्तमोक्षण सभी लक्षणों में लगभग उत्तम लाभप्रद सिद्ध हुआ ।

शल्य तंत्र – 08

मूत्रवहस्रोतोगत अश्मरी पर मूत्रविरेचनीय महाकषाय की कार्मुकता

अध्येता : डा. जगदीश प्रसाद वर्मा

निर्देशक : डा. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. हेमन्त कुशवाह

वर्ष : 1995

इस महानिबन्ध का उद्देश्य मूत्रवहस्रोतोगत अश्मरी में सर्वसुलभ एवं अल्पव्ययवाली औषधि की कार्मुकता का अध्ययन करना है ।

इस अध्ययन हेतु मूत्रविरेचनीय महाकषाय (च.सू.4/15(35)) का 25 ग्राम की मात्रा में क्वाथ बनाकर दिन में 2 बार प्रयुक्त किया गया । आतुर संख्या 20 निर्धारित करके 2 वर्गों 'अ' व 'ब' में विभक्त किया गया । प्रत्येक वर्ग में 10 रोगी रख कर प्रथम 'अ' वर्ग में मूत्रविरेचनीय महाकषाय व द्वितीय वर्ग 'ब' में Control group की तरह औषधाभास का प्रयोग 30 दिन कराया गया ।

परिणामस्वरुप वर्ग 'अ' में मूत्रविरेचनीय महाकषाय के प्रयोग से आतुरगत रोग लक्षणों का आंशिक उपशमन हुआ । वर्ग 'ब' में समस्त रोग लक्षण एवं परीक्षण अपरिवर्तित रहे ।

अतः यह औषधि मूत्रविरेचक तो है किन्तु अश्मरी निर्हरक नहीं है ।

Shalya Tantra - 09

Study on the effect of Paniakshar and Siravyadh in the management of Yakriddalyudara (Hepatomegaly)

Scholar	:	Dr. Vindhya Rani
Guide	:	Dr. S.S. Sharma
Co-Guide	:	Dr. H.K. Kushwah
Year	:	1995

The main aim of this thesis is to study on the effect of Paniakshar and Siravyadh in the management of Yakriddalyudara.

20 patients of Yakriddalyudara were selected for the study and divided in two groups 'A' and 'B'. Group 'A' had treated with Suktikshar (Yog Ratnakar, Udarchikitsa) orally in the dose of 500 mg twice a day and in group 'B' blood letting was done in Rt. Medial Cubital Vein. The Duration of treatment was 21 days. The blood is withdrawn with the help of disposable syringe in the quantity of 50-150 C.C.

After therapy in group 'A' 24.67, 23.29%, 29.3% improvement was seen in SGPT, SGOT and Serum alkaline phosphatase respectively. In group 'B' 16.6%, 15.54% and 16.07% improvement was seen in SGPT, SGOT and Serum alkaline phosphatase respectively.

शल्य तंत्र – 10

रक्तार्श में समङ्गादि चूर्ण की कार्मुकता का अध्ययन

अध्येता : डा. दिपालीसुन्दरी वर्मा

निर्देशक : डा. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. एस.एस. शर्मा

वर्ष : 1995

रक्तार्श में समङ्गादि चूर्ण (चक्रदत्त 5/115) की कार्मुकता का अध्ययन करना इस महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

कार्य योजनान्तर्गत 16 रोगियों का चयन कर 4 वर्गों में विभक्त किया गया। प्रत्येक वर्ग में 4 रोगी रखे गए । वर्ग 'अ' में मलत्याग के समय रक्तस्राव, वर्ग 'ब' में मलत्याग पूर्व रक्तस्राव, वर्ग 'स' में मलत्याग पश्चात् रक्तस्राव व वर्ग 'द' में तीनों ही सम्मिलित किए गए । प्रत्येक वर्ग में 3–3 ग्राम समङ्गादि चूर्ण 6–6 घंटे के अंतराल में 4 बार प्रयोग कराया गया । सहपान के रुप में अजादुग्ध का प्रयोग कराया गया। औषध प्रयोग अवधि 7 दिन रखी गई ।

परिणामस्वरुप वर्ग 'अ' व वर्ग 'ब' में रक्तस्राव व विबन्ध में लाभ क्रमशः पांचवें, छठे दिन प्राप्त हुआ । वर्ग 'स' के रोगियों में से एक रोगी में रक्तस्राव व 2 रोगियों में विबन्ध सातवें दिन भी देखा गया । जबकि वर्ग 'द' के 2 रोगियों में रक्तस्राव व 2 रोगियों में विबन्ध एक सप्ताह बाद भी देखा गया ।

शल्य तंत्र – 11

अर्श चिकित्सा में क्षारसूत्र व सामान्य सूत्र का प्रयोगात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. रंजना रूसीया

निर्देशक : डा. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. एच. के. कुशवाह

वर्ष : 1995

अर्श चिकित्सा में अर्शांकुरों के कटने का समय, सूत्र बन्धनोपरान्त उपद्रवों तथा अर्शांकुर कटने के पश्चात् व्रणरोपण के समय का अध्ययन करने हेतु ही महानिबन्ध का विषय चयनित किया गया है।

इस अध्ययन हेतु 24 आतुरों का चयन कर 2 वर्ग 'अ' एवं 'ब' में विभक्त किया गया । प्रत्येक वर्ग में रोगी संख्या 12 रखी गई । प्रथम 'अ' वर्ग में क्षारसूत्र (चक्रदत्त 5/148) एवं वर्ग 'ब' में सामान्य सूत्र का प्रयोग किया गया ।

परिणामस्वरुप क्षारसूत्र बंधन पश्चात् वर्ग 'अ' के रोगियों में अर्शांकुर कटने का समय 3–7 दिन एवं वर्ग 'ब' में सामान्य सूत्र बंधन पश्चात् अर्शांकुर कटने का समय 8–12 दिन रहा । व्रणरोपण का समय वर्ग 'अ' के रोगियों में 4–8 दिन रहा तथा वर्ग 'ब' के रोगियों में 7–11 दिन रहा ।

अतः वर्ग 'अ' में अर्शांकुर कटने तथा व्रणरोपण का समय वर्ग 'ब' की अपेक्षा कम रहा । उपद्रवों व अन्य लक्षणों में अधिक लाभ क्षारसूत्र से रहा ।

शल्य तंत्र – 12

रक्तार्श में कुटजादि रसक्रिया की कार्मुकता का अध्ययन

अध्येता : डा. महेश दीक्षित

निर्देशक : डा. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. एच.के. कुशवाह

वर्ष : 1997

इस महानिबन्ध का उद्देश्य अनुपान भेद से कुटजादि रसक्रिया (च.चि. 14/188–190) की कार्मुकता का रक्तार्श में अध्ययन करना है ।

कार्य योजनान्तर्गत 30 आतुरों का चयन करके तीन वर्ग 'अ', 'ब व 'स' बनाए गए । प्रत्येक वर्ग में 10–10 रोगी रखे गए । वर्ग 'अ' में कुटजादि रसक्रिया + शीतल जल, वर्ग 'ब' में कुटजादि रसक्रिया + मण्ड तथा वर्ग 'स' में कुटजादि रसक्रिया + अजापय का प्रयोग किया गया । प्रत्येक रोगी को कुटजादि रसक्रिया 500 मि.ग्रा. की मात्रा में दिन में 3 बार 7 दिन तक दी गई ।

अध्ययन पश्चात् पाया गया कि धारयुक्त रक्त प्रवृत्ति वाले आतुरों में वर्ग 'अ' में 71.42 प्रतिशत, वर्ग 'ब' में 50 प्रतिशत व वर्ग 'स' में 80 प्रतिशत लाभ रहा । बूंद युक्त रक्त प्रवृत्ति में 'अ' वर्ग में 100 प्रतिशत, 'ब' वर्ग में 83.33 प्रतिशत तथा वर्ग 'स' में 100 प्रतिशत लाभ रहा । मल मिश्रित रक्त प्रवृत्ति में औषध कार्मुकता 100 प्रतिशत रही ।

शल्य तंत्र – 13

आमवात में अग्निकर्म व सिंहनाद गुग्गुलु का चिकित्सात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. गुलाब चन्द बैरवा

निर्देशक : डा. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. एच.के. कुशवाह

वर्ष : 1997

इस महानिबन्ध का उद्देश्य आमवात में अग्निकर्म व सिंहनाद गुग्गुलु (भैषज्य रत्नावली 29/181–184) का चिकित्सात्मक अध्ययन करना है ।

कार्य योजनान्तर्गत 30 रोगियों का चयन कर 3 वर्गों में विभक्त किया गया । प्रत्येक वर्ग में 10 रोगी रखे गए । वर्ग 'अ' में सिंहनाद गुग्गुलु का 500 मि.ग्रा. की मात्रा में दिन में 2 बार 4 सप्ताह तक उष्णोदक के साथ प्रयोग कराया गया । वर्ग 'ब' के आतुरों में सिंहनाद गुग्गुलु व अग्निकर्म का प्रयोग किया गया । वर्ग 'स' के आतुरों में अग्निकर्म का प्रयोग किया गया । अग्नि कर्म का प्रयोग 7–7 दिन पर किया गया।

परिणामस्वरुप वर्ग 'अ' में औसत लाभ 87.44 प्रतिशत, वर्ग 'ब' में औसत लाभ 90.77 प्रतिशत एवं वर्ग 'स' में औसत लाभ 23.83 प्रतिशत रहा ।

शल्य तंत्र – 14

कदर में अग्निकर्म की कार्मुकता

अध्येता : डा. रमेश चन्द्र शर्मा

निर्देशक : डा. एस.एस. शर्मा

वर्ष : 1997

कदररोग में अग्निकर्म की कार्मुकता का अध्ययन करना ही इस महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

इस अध्ययन हेतु 20 आतुरों का चयन कर 2 वर्गों में विभाजित किया गया । वर्ग 'अ' के 10 आतुरों में शलाका द्वारा व्याधिग्रस्त भाग पर दग्ध किया गया । वर्ग 'ब' के 10 आतुरों के कदर के ऊपर के कठोर भाग को सावधानीपूर्वक हटाकर उष्णतैल से विधिपूर्वक दग्ध किया गया ।

अध्ययन पश्चात् पाया गया कि 'अ' वर्ग के आतुरों में शत प्रतिशत उपशय रहा एवं 'ब' वर्ग के आतुरों में कुल उपशय 20 प्रतिशत रहा ।

Shalya Tantra - 15

Clinical study on Rohitakarista in reference to Cholelithiasis

Scholar	:	Dr. Hemant Kumar Panigrahi
Guide	:	Prof. S.S. Sharma
Co-Guide	:	Dr. H.K. Kushwah
Year	:	1998

The aim of this thesis is to evaluate the various etiological factors of Cholelithiasis and to study on the effect of Rohitakarista on Cholelithiasis.

20 patients were selected for this thesis work. The drug Rohitakarista (Rajakiya Ausadh Yog Samgraha, Ashmari Prakran) was given in a dose of 20ml t.d.s. with equal quantity of water & patients were followed up for 3 months.

Study reveals among 20 patients, 8 patients showed remission (first grade response) and 12 patients showed partial remission (second grade response), means 40% of patients got remission and 60% of patients got partial remission.

Shalya Tantra - 16

Evaluation of the efficacy of Agnikarma and Physical exercise (Physiotherapy) in the management of Katishoola (Lumbago)

Scholar	:	Dr. K.Srinivash Kumar
Guide	:	Prof. S.S. Sharma
Co-Guide	:	Dr. H.K. Kushwah
Year	:	1999

The aim of this thesis is to study the fundamental of Agnikarma & Physiotherapy and also evaluate the efficacy of both in the management of pain.

Total number of patients were selected 30 in number and divided in three groups. 1st group ‘A’ applied with Agnikarma, 2nd group 'P' treated with Physiotherapy and 3 rd group 'AP' treated with both Agnikarma & Physiotherapy combinely.

In the intensity of pain Agnikarma therapy shown 81.0375% relief, Physiotherapy shown 76.56% relief and combined therapy shown 90.25% relief after 21 days.

In presence of pain group ‘P’ showed 40% relief, group 'A' showed 60% relief and combined therapy (group 'AP') showed 70% relief after 21 days.

शल्य तंत्र – 17

अष्ठीला रोग में दशमूलादि क्वाथ का चिकित्सात्मक प्रभाव

अध्येता : डा. प्रेमलाल भारती

निर्देशक : प्रो. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. एच.के. कुशवाह

वर्ष : 1999

इस महानिबन्ध का उद्देश्य अष्ठीला रोग पर दशमूलादि क्वाथ के प्रभाव का अध्ययन करना है ।

कार्य योजनान्तर्गत 20 आतुरों का चयन कर 2 वर्ग बनाए गए । जिनमें से प्रत्येक वर्ग में 10–10 रोगियों को रखा गया । वर्ग 'अ' को Placebo therapy तथा वर्ग 'ब' के रोगियों को दशमूलादि क्वाथ (योगरत्नाकर, मूत्राघात चिकि.) का प्रयोग 2 माह तक करवाया गया । दशमूलादि क्वाथ 2 तोला की मात्रा में 2 बार सेवन करवाया गया ।

परिणामस्वरुप वर्ग 'अ' के रोगियों को लाभ नहीं हुआ, जबकि वर्ग 'ब' के रोगियों को 55 प्रतिशत औसत लाभ रहा ।

शल्य तंत्र – 18

गुदपरिकर्तिका रोग में जात्यादि घृत एवं पंचतिक्त घृत गुग्गुलु की कार्मुकता का अध्ययन

अध्येता : डा. राजेश कुमार गुप्ता

निर्देशक : प्रो. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. एस.एस. शर्मा

वर्ष : 1999

इस महानिबन्ध का उद्देश्य गुदपरिकर्तिका रोग में जात्यादि घृत (शा.सं.म. खण्ड 6/58–59) एवं पंचतिक्त घृत गुग्गुलु (भैषज्य रत्नावली 54/233–236) की कार्मुकता का अध्ययन करना है ।

कार्य योजनान्तर्गत 20 आतुरों का चयन कर उन्हें 2 वर्गों में विभक्त किया गया। वर्ग 'अ' के 10 रोगियों को जात्यादि घृत का दिन में 3 बार गुद पर स्थानिक लेप करवाया गया तथा वर्ग 'ब' के रोगियों को जात्यादि घृत के लेप के साथ ही पंचतिक्त घृत गु0 का आभ्यंतर प्रयोग 3–6 माशा मात्रा में दिन में 2 बार 2 माह तक करवाया गया ।

वर्ग 'अ' में P value 0.001 प्राप्त हुई जो कि उत्तम परिणाम को इंगित करती है। गुद संकोच की P value 0.05 प्राप्त हुई जो लाभ नहीं होने को इंगित करती है । वर्ग 'ब' में गुद संकोच आदि लक्षणों में P value 0.001 है जो कि उत्तम परिणामों को इंगित करती है ।

शल्य तंत्र – 19

गृध्रसी रोग की चिकित्सा में सिराव्यध की कार्मुकता

अध्येता : डा. ज्ञानीराम मीणा

निर्देशक : प्रो. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. एस.एस. शर्मा

वर्ष : 1999

इस महानिबन्ध का उद्देश्य गृध्रसी रोग में सिराव्यध की कार्मुकता का अध्ययन करना है।

कार्य योजनान्तर्गत 20 रोगियों का चयन किया गया और रोगियों में स्नेहन–स्वेदनोपरांत 20 मि.लि. रक्त सिराव्यध द्वारा एक बार ही निर्हरित किया गया ।

परिणाम लक्षणों के उपशमन के आधार पर निम्न बिंदुओं के अनुसार निश्चित किया गया– अलाभ 0 प्रतिशत, अल्पलाभ 1–35 प्रतिशत, मध्यम लाभ 36–65 प्रतिशत व उत्तम लाभ 66–100 प्रतिशत निर्धारित किया गया । परिणामस्वरुप 9 आतुरों में उत्तम लाभ रहा जिनका औसत लाभ 74.64 प्रतिशत रहा । 11 आतुरों को मध्यम लाभ हुआ जिनका औसत लाभ 54.22 प्रतिशत रहा । 20 आतुरों में कुल औसत लाभ 63.41 प्रतिशत रहा ।

Shalya Tantra - 20

Study of evaluate the efficacy of "Lavanottamadya churna" in the management of Arsha Roga (Haemorroids)

Scholar	:	Dr. Durve Nilesh Arvind
Guide	:	Prof. S.S. Sharma
Co-Guide	:	Dr. S.S. Sharma
Year	:	2000

The main aim of this thesis is to evaluate the efficacy of “Lavanottamadya churna” (Chakradatta 5/60 & A.H.Chi 8/161) in the management of Arsha roga.

20 patients were selected and divided in two groups named ‘A’ & ‘B’ group. Group ‘A’ was given Placebo and group 'B' was given “Lavanottamadya churna” in the dose of 8 gm with takra 100 ml, 4 times a day in apankala i.e. before meal was advised. Duration of treatment was 1 month.

Over all efect in symptoms of controlled group was insignificant as $t=1.538$, $p<0.10$, where as treated group was highly significant as $t=6.82$, $p<0.001$.

Group ‘B’ proved effective in constipation, agnimandya, bleeding P/R, pain and itching respectively 100%, 88.88%, 63.63%, 100% & 100%. There was no significant change in pile mass assessed with degree of haemorroids were observed. So drug should be administered in Bhashajsadhya piles only.

Shalya Tantra - 21

Comparative study of Murivenna Taila and Jatyadi Taila in the management of Fistula in Ano

Scholar	:	Dr. Gadve Babashab Nana
Guide	:	Prof. S.S. Sharma
Co-Guide	:	Dr. H.K. Kushwah
Year	:	2000

The main aim of this thesis is to evaluate the action of Murivenna Taila (Contribution of Kerala tradition practitioners) & Jatyadi Taila (Bhaishajya Ratnavali 46/37-38) in the management of Fistula in Ano.

For clinical trial 20 patients were selected and distributed in two groups (10 in each group). Group named A and B. After Ksharasutra ligation in fistulous track Jatyadi Taila applied in group 'A' to see the efficacy in pus discharge, pain, inflammation, burning sensation and in group 'B' after Ksharsutra ligation, Murivenna Taila used to see the associated symptoms stated above. Duration of treatment was 4 weeks.

Group 'A' showed 91.56% relief after 4 weeks on combine clinical features & group 'B' showed 90% relief after 4 weeks on combine clinical features.

It is very clear that Jatyadi Taila shows better over all the effect than Murivenna Taila in clinical feature.

Shalya Tantra - 22

Evaluation of efficacy of Tailadaha & Ksharakarma in Fistula in Ano (Bhagandara)

Scholar : Dr. Bhandekar Rashmi Prakash

Guide : Prof. S.S. Sharma

Year : 2000

The main aim of this thesis is to study the action of Tailadaha & Ksharakarma combinely in Fistula in Ano.

For this dissertation 16 patients were selected and divided in two groups. Group 'A' treated with Nishadya Taila (Bhavprakash M.Kh. 50/31) & Ksharasutra (Chakradatta 5/148) and group 'B' treated with Vishyandan Taila (Su.Chi. 17/29) & Ksharasutra. Duration of the treatment taken up to cutting & healing of fistulous track so the result come out of this.

Relief in severity of pain in group 'A' was 72.23% and in group 'B' was 42.11%. Relief in severity of discharge in group 'A' was 79% and in group 'B' was 52.63%. Advantage percentage in the characters - unit cutting time, unit healing time, recurrence, pus culture & sensitivity and ESR in group 'A' were 4.13 days/cm, 6.72 days/cm, 12.5%, 87.5% and 5.3% respectively. The advantage in above characters in group 'B' were 5.27 days/cm, 9.10 days/cm, 37.5%, 25% and 3.27% respectively.

So group 'A' had given more beneficial results than group 'B'.

Shalya Tantra - 23

The Clinical study to evaluate the efficacy of Arshaghna Mahakashaya with Nagkeshara in the management of Raktarsha (Bleeding Piles)

Scholar	:	Dr. Dhananjaya Sarkar
Guide	:	Prof. S.S. Sharma
Co-Guide	:	Dr. H.K. Kushwah
Year	:	2001

The main aim of this thesis is to control the blood loss in Bleeding Piles by oral administration of Arshaghna Mahakashaya (Charak Su. 4/12) with Nagkeshar.

40 patients were selected and divided in 4 groups (10 in each group). Group 'A' was given placebo therapy. Patients of group 'B', 'C' and 'D' were treated by powder of Nagkeshar alone in the dose of 3 gm. b.d., capsule of Arshaghna Mahakashaya 2 cap. t.d.s. (500mg per capsule), and a combination of powder of Nagkeshar and capsule of Arshaghna Mahakashaya respectively. Duration of treatment was 4 weeks.

The effect of placebo therapy in group 'A' was insignificant. Group B,C and D showed significant result. Patients of group 'A' showed 8% improvement of total symptoms. Group B,C,D showed 36.26%, 72.41%, 89.65% improvement respectively.

शल्य तंत्र – 24

बी.पी.एच. रोग की चिकित्सा में शिलाजत्वादि वटी के प्रभाव का सोनोग्राफीकल अध्ययन

अध्येता : डा. उमेश चंद शर्मा

निर्देशक : प्रो. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. एच.के. कुशवाह

वर्ष : 2001

इस महानिबन्ध का उद्देश्य बी0पी0एच0 रोग की चिकित्सा में शिलाजत्वादि वटी (सिद्धयोगसंग्रह, प्रमेहरोगाधिकार) की कार्मुकता का अध्ययन करना है ।

कार्य योजनान्तर्गत 30 आतुरों का चयन कर 3 वर्गों में विभक्त किया गया । वर्ग 'क' के 10 रोगियों को स्वर्णयुक्त शिलाजत्वादि वटी दी गई तथा वर्ग 'ख' के 10 रोगियों को स्वर्णरहित शिलाजत्वादि वटी दी गई तथा वर्ग 'ग' के 10 रोगियों को माण्ड युक्त कैप्सूल दिया गया । शिलाजत्वादि वटी की 2–2 वटी (500 मि.ग्रा. प्रति वटि) का दिन में 2 बार प्रातः सायं दुग्ध अनुपान के साथ प्रयोग कराया गया। औषधि सेवन अवधि 40 दिन रखी गई ।

परिणामस्वरुप सोनोग्राफीकल अध्ययन से वर्ग 'क' में 71.11 प्रतिशत लाभ, वर्ग 'ख' में 54.54 प्रतिशत लाभ व वर्ग 'ग' में 0 प्रतिशत लाभ रहा ।

शल्य तंत्र – 25

धान्वन्तरम् क्वाथ एवं शोथशार्दुल तैल का आघातज शोथ की चिकित्सा में प्रभावात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. हरिमोहन मीणा

निर्देशक : प्रो. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. एस.एस. शर्मा

वर्ष : 2001

इस महानिबन्ध का उद्देश्य आघातज शोथ में धान्वन्तरम् क्वाथ (अ0ह्व0शा0 गर्भव्यापद् शारीर में वर्णित बला तैल के घटक द्रव्यों से निर्मित) एवं शोथशार्दुल तैल (भै0र0 शोथरोग चिकि0 42/169–173) के प्रभाव का अध्ययन करना है ।

कार्य योजनान्तर्गत 37 रोगियों का चयन कर 4 वर्गों में विभक्त किया गया । वर्ग 'अ' में 7 रोगी व अन्य 'ब', 'स' एवं 'द' वर्ग में 10–10 रोगी रखे गए । वर्ग 'अ' के रोगियों को Placebo, वर्ग 'ब' में धान्वन्तरम् क्वाथ 50 मि.लि. दिन में 2 बार, वर्ग 'स' में शोथशार्दुल तैल अभ्यंगार्थ तथा वर्ग 'द' में दोनों का प्रयोग किया गया । उपरोक्त औषधियाँ 7 दिन तक रोगी को प्रदत्त की गई ।

परिणामस्वरुप वर्ग 'अ' में लाभ 36.19 प्रतिशत (आंशिक लाभ), वर्ग 'ब' में 79.57 प्रतिशत लाभ, वर्ग 'स' में लाभ 69.47 प्रतिशत तथा वर्ग 'द' में 82.37 प्रतिशत लाभ हुआ ।

Shalya Tantra - 26

The role of submucosal injection of 5% Ksharsolution (Ksharodaka) in Almond oil for the management of Bleeding Piles (Raktarsha) with special reference to Redundant Mucosa

Scholar : Dr. Ramesh Chand

Guide : Prof. S.S. Sharma

Year : 2001

The main aim of this thesis is to highlight the effect of submucosal Ksharodaka injection in the management of bleeding piles and redundant mucosa and also to see general effect of Ksharodaka as a submucosal injection on pulse, B.P., weight etc.

Clinical study was carried out on 100 cases in the drug trial group and 50 cases in control group (2^{nd} category), out of 150 cases 100 cases of internal piles were kept in 1^{st} group or category and they are treated with submucosal injection of Ksharodaka (50mg Apamargakshar in 3ml. distilled water) in Almond oil. Where as 50 cases of the internal piles were kept in control group (2^{nd} category) and were treated with submucosal injection of 5% Phenol in Almond oil. The submucosal injection is given in a dose of 3 ml in the base of the each pile mass or just above the anorectal ring. The Duration of treatment was 6 weeks.

In 1st category out of 100 cases 47 cases of first degree haemorrhoids of which 32 patients were found completely cured and other 39 cases of 2^{nd} degree haemorrhoids got marked improvement consequently. 14 cases of 3^{rd} degree haemorrhoids, 9 patients showed good improvement while 5 patients showed poor response.

In 2nd category out of 50 cases 20% cases showed excellent result, 44% showed significant improvement, while 30% cases showed good effect.

Result shows that experimental group reveals a good result than control group.

शल्य तंत्र – 27

जानु संधिवात की चिकित्सा में सिंहनाद गुग्गुलु एवं मुरीवन्ना तैल की कार्मुकता का अध्ययन

अध्येता : डा. लालजी

निर्देशक : प्रो. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. एच. के. कुशवाह

वर्ष : 2001

इस महानिबन्ध का उद्देश्य जानु संधिवात में सिंहनाद गुग्गुलु (चक्रदत्त 25/29–34) एवं मुरीवन्ना तैल (केरल ट्रेडिशनल प्रेक्टिशनर्स द्वारा निर्मित) का प्रयोग करके इसके प्रभावों का अध्ययन करना है।

कार्य योजनान्तर्गत 30 आतुरों का चयन कर 3 वर्गों में 10–10 रोगी रखे गए । वर्ग 'अ' में आभ्यंतर प्रयोगार्थ सिंहनाद गु0, वर्ग 'ब' में स्थानिक बाह्य प्रयोगार्थ मुरीवन्ना तैल एवं वर्ग 'स' में दोनों का प्रयोग किया गया । सिंहनाद गु0 2–3 ग्राम प्रतिदिन, प्रातः सायं 2 बार उष्णजल से तथा मुरीवन्ना तैल का अभ्यंगार्थ उचित मात्रा में बाह्य प्रयोग किया गया । चिकित्सावधि 30 दिन रखी गई ।

परिणामस्वरुप 30 दिनों में वर्ग 'स' के रोगियों को लाभ प्राप्ति सर्वाधिक रही तथा सबसे कम लाभ वर्ग 'ब' को हुआ । वर्ग 'अ' में औसत लाभ 68.27 प्रतिशत, वर्ग 'ब' में औसत लाभ 66.66 प्रतिशत एवं वर्ग 'स' में औसत लाभ 75.86 प्रतिशत रहा ।

Shalya Tantra - 28

A Clinical study of efficacy of Ksharsutra and Kustharakshasa Taila in the management of "Bhagandara" (Fistula in Ano)

Scholar	:	Dr. Sachin Damodar Kulkarni
Guide	:	Prof. S.S. Sharma
Co-Guide	:	Dr. S.S. Sharma
Year	:	2002

The aim of this thesis is to study the efficacy of Ksharasutra (Chakradatta 5/148) & Kustharakshasa Taila (Bhaishajya Ratnavali 54/86-90) in form of vrana vasti in case of Bhagandara.

Number of patients selected for this work were 20, divided in two groups named ‘A’ & ‘B’. Group ‘A’ treated with only Ksharasutra & ‘B’ treated with both Ksharsutra & Kustharakshasa Taila. Duration was upto cutting of fistulous track.

Over all effect of relief in all clinical features of group ‘A’ was 88.23%, while in group ‘B’ was 92.22%.

Conclusion can be drawn that group ‘B’ in which Ksharasutra was administered along with Kushtharakshasa Taila in form of vrana vasti showed more competent estimable advisable and worth while remedy regarding the management of Bhagandara.

Shalya Tantra - 29

A Comparative study on the efficacy of Agnikarma & Electrotherapy with Simhanada Guggulu in the management of Katishoola (Lumbago)

Scholar : Dr. Nilesh Kumar Ahuja

Guide : Prof. S.S. Sharma

Co-Guide : Dr. H.K. Kushwah

Year : 2002

The main aim of this thesis is to evaluate & compare the efficacy of Agnikarma and Electrotherapy in management of Katishoola and also to evaluate the efficacy of Simhanada Guggulu (Chakradatta 25/29-34) in Katishoola.

50 patients were selected & divided in 5 groups for this work, mainly 'A' for Agnikarma. Group 'E' for Electrotherapy. Group 'D' for drug Simhanada Guggulu. Group 'ED' for Electrotherapy + drug and group 'AD' for Agnikarma and drug combinely.

Simhanada Guggulu was given in the dose of 2-3 gm (half teaspoon twice) daily with hot water or milk. Duration of treatment was 4 weeks.

The results came out that average percentage relief in group 'A' was 61.96%, in group 'E' was 57.17%, in group 'D' was 66.71%, in group 'ED' was 73.92% and in group 'AD' was 87.33%.

According to this maximum 87.33% result was found in group 'AD' treated with Agnikarma and drug combinely. So the results of this group were more significant than the other groups.

शल्य तंत्र – 30

जलौकावचारण एवं लघुमंजिष्ठादि क्वाथ (घनवटी) की कार्मुकता – विचर्चिका रोग के परिप्रेक्ष्य में

अध्येता : डा. मनोज कुमार शर्मा

निर्देशक : प्रो. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. महेन्द्र कुमार श्रृंगी

वर्ष : 2002

विचर्चिका रोग में शोधन (जलौकावचारण) एवं शमन (लघुमंजिष्ठादि क्वाथ घनवटी) का तुलनात्मक अध्ययन लक्षणों की शांति हेतु करना ही इस महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

कार्य योजनान्तर्गत 40 आतुरों का चयन कर 4 वर्ग बनाए गए । प्रत्येक वर्ग में 10 रोगी रखे गए । प्रथम वर्ग में जलौका का प्रयोग रक्तमोक्षणार्थ किया गया । द्वितीय वर्ग में शमन प्रयोगान्तर्गत लघुमंजिष्ठादि क्वाथ (भै.र. 54/66–67) घनवटी का आभ्यंतर प्रयोग कराया गया । तृतीय वर्ग में जलौकावचारण एवं लघुमंजिष्ठादि क्वाथ घनवटी दोनों का प्रयोग किया गया । चतुर्थ वर्ग में औषध प्रयोग न करके औषधाभास का प्रयोग किया गया । लघुमंजिष्ठादि क्वाथ घनवटी की तीन–तीन वटी दिन में तीन बार (वयस्क में) 6 सप्ताह तक जल से सेवन कराई गई । जलौकावचारण प्रत्येक 7 दिन बाद 6 बार कराया गया । दंश स्थान पर खुजली, दाह या शूल होने पर जलौका को हटा दिया गया ।

परिणामस्वरुप तृतीय वर्ग में सर्वाधिक औसत लाभ 76.56 प्रतिशत रहा । वर्ग प्रथम में औसत लाभ 68.61 प्रतिशत प्राप्त हुआ । द्वितीय वर्ग में औसत लाभ 63.01 प्रतिशत रहा तथा चतुर्थ वर्ग में औसत लाभ 11.65 प्रतिशत प्राप्त हुआ ।

शल्य तंत्र – 31

स्कैबीज की चिकित्सा में पामाहर लेप एवं महातिक्त घृत की कार्मुकता का चिकित्सात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. राजेन्द्र कुमार वर्मा

निर्देशक : प्रो. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. एम. के. श्रृंगी

वर्ष : 2003

स्कैबीज रोग के लक्षणों का पामा के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए पामाहर लेप व महातिक्त घृत की कार्मुकता का अध्ययन करना ही इस महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

कार्य योजनान्तर्गत 40 आतुरों का चयन करके चार वर्गों 'अ', 'ब', 'स', 'द' में विभक्त किया गया । प्रत्येक वर्ग में 10 आतुर रखे गए । प्रथम वर्ग 'अ' में कोई औषधि नहीं दी गई । द्वितीय वर्ग 'ब' में पामाहर लेप (भै0र0 54/29) का बाह्य प्रयोग किया गया । तृतीय वर्ग 'स' में महातिक्त घृत (भै0र0 54/243–249) का प्रयोग किया गया । चतुर्थ वर्ग 'द' में दोनों का प्रयोग किया गया । पामाहर लेप का बाह्य प्रयोग 4 सप्ताह तक तथा महातिक्त घृत 10 ग्राम दिन में 2 बार आभ्यंतर प्रयोगार्थ 4 सप्ताह तक दिया गया ।

परिणामस्वरुप प्रथम 'अ' वर्ग में औसत लाभ 29.66 प्रतिशत, द्वितीय वर्ग 'ब' में औसत लाभ 66.75 प्रतिशत, तृतीय वर्ग 'स' में औसत लाभ 32.06 प्रतिशत तथा चतुर्थ वर्ग 'द' में औसत लाभ 75.55 प्रतिशत रहा ।

शल्य तंत्र – 32

विचर्चिका रोग के परिप्रेक्ष्य में जलौकावचारण एवं पंचनिम्बचूर्ण (वटी) की कार्मुकता का एक अध्ययन

अध्येता : डा. रामेश्वर प्रसाद गुप्त

निर्देशक : प्रो. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. एम. के. श्रृंगी

वर्ष : 2003

इस महानिबन्ध का उद्देश्य जलौकावचारण के मूल सिद्वान्तों का अध्ययन एवं पंचनिम्ब चूर्ण (वटी) का विचर्चिका की चिकित्सा में प्रभावात्मक अध्ययन करना है ।

कार्य योजनान्तर्गत 40 आतुरों का चयन कर 4 वर्ग बनाकर प्रत्येक वर्ग में 10 रोगियों को रखा गया। प्रथम वर्ग में रक्तमोक्षणार्थ जलौकावचारण कराया गया । द्वितीय वर्ग में पंचनिम्ब चूर्ण (वटी) (शा.सं.म. खण्ड 6/149–154) का वयस्कों में 2 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार व बालकों में 1 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार प्रयोग कराया गया। तृतीय वर्ग में दोनों का प्रयोग तथा चतुर्थ वर्ग में आभासी औषध का सेवन कराया गया। अनुपान साधारण जल एवं चिकित्सावधि 30 दिन रही ।

परिणामस्वरुप औसत लाभ प्रथम वर्ग में 69.34 प्रतिशत, द्वितीय वर्ग में 61.42 प्रतिशत, तृतीय वर्ग में 83.27 प्रतिशत एवं चतुर्थ वर्ग में 7.35 प्रतिशत रहा ।

शल्य तंत्र – 33

जीर्ण गुदपरिकर्तिका रोग की चिकित्सा में जात्यादिघृत, त्रिफला गुग्गुलु एवं **Anal dilator** की कार्मुकता का अध्ययन

अध्येता : डा. नमोनारायण मीणा

निर्देशक : प्रो. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. एस. एस. शर्मा

वर्ष : 2003

इस महानिबन्ध का उद्देश्य जीर्ण गुदपरिकर्तिका में जात्यादिघृत, त्रिफला गु0 एवं गुदविस्फारण की कार्मुकता का अध्ययन एवं परिकर्तिका रोग के सिद्वान्तों का अध्ययन करना है ।

कार्य योजनान्तर्गत 20 आतुरों का चयन कर 2 वर्ग बनाए गए तथा प्रत्येक वर्ग में 10–10 रोगी रखे गए । वर्ग 'अ' के रोगियों को जात्यादि घृत 5 मि.लि. (शा.म.खण्ड 9/58–59) का दिन में 2 बार गुद पर स्थानिक लेप एवं त्रिफला गु. (चक्रदत्त 43/68) 2–2 गोली प्रातः सायं सेवन करवाई गई । वर्ग 'ब' के रोगियों में जात्यादि घृत का प्रयोग मलत्याग के पूर्व व पश्चात् करवाया गया एवं प्रातः काल प्रतिदिन मलत्याग के दो घंटे बाद Anal dilator का प्रयोग करवाया गया । प्रयोग अवधि 4 सप्ताह रखी गई।

परिणामस्वरुप वर्ग 'अ' के रोगियों को 69.87 प्रतिशत एवं वर्ग 'ब' के रोगियों को 86.49 प्रतिशत लाभ रहा ।

शल्य तंत्र – 34

अर्शरोग की चिकित्सा में अर्शोहर मलहर एवं लॉर्ड्स विधि का तुलनात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. प्रमीला कुमारी

निर्देशक : प्रो. एस.एस. शर्मा

वर्ष : 2003

इस महानिबन्ध का उद्देश्य अर्श रोग की चिकित्सा में अर्शोहर मलहर (रसतंत्रसार व सिद्धप्रयोगसंग्रह, प्रथम खण्ड, पृ. 869) व लॉर्ड्स विधि का तुलनात्मक अध्ययन एवं अर्शोहर मलहर का स्थानीय प्रयोग के प्रभाव का मूल्यांकन करना है ।

कार्य योजनान्तर्गत 30 आतुरों का चयन कर 3 वर्ग बनाकर प्रत्येक वर्ग में 10–10 रोगी रखकर परीक्षण किया गया । वर्ग 'क' में अर्शोहर मलहर का स्थानिक प्रयोग, वर्ग 'ख' में लार्ड्स विधि एवं वर्ग 'ग' में दोनों का स्थानिक प्रयोग किया गया । प्रयोग अवधि 7 दिन रही ।

उन्नति का मूल्यांकन निम्न लक्षणों के आधार पर किया गया –

वर्ग 'क' में रक्तस्राव, कोष्ठबद्धता, अर्शांकुर, गुदशूल एवं गुदकण्डू में लाभ क्रमशः 66.7 प्रतिशत, 14.2 प्रतिशत, 14.2 प्रतिशत, 75 प्रतिशत एवं 90.9 प्रतिशत रहा । उपरोक्त इन्हीं लक्षणों में वर्ग 'ख' में लाभ क्रमशः 85.7 प्रतिशत, 100 प्रतिशत, 84 प्रतिशत, 75 प्रतिशत व 33.3 प्रतिशत रहा । वर्ग 'ग' में उपरोक्त लक्षणों में लाभ क्रमशः 94 प्रतिशत, 100 प्रतिशत, 86.3 प्रतिशत, 100 प्रतिशत व 100 प्रतिशत रहा । अतः सर्वाधिक लाभ वर्ग 'ग' को हुआ, जहाँ दोनों प्रकार की संयुक्त चिकित्सा का प्रयोग किया गया ।

शल्य तंत्र – 35

अर्श चिकित्सा में स्नुहीक्षीर निर्मित क्षारसूत्र एवं उदुम्बर क्षीर निर्मित क्षारसूत्र का तुलनात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. सुरेन्द्र कुमार गौतम

निर्देशक : प्रो. एस.एस. शर्मा

वर्ष : 2004

इस महानिबन्ध का उद्देश्य अर्शांकुरों के कटने में स्नुहीक्षीर निर्मित क्षारसूत्र (चक्रदत्त 5/148) एवं उदुम्बर क्षीर निर्मित क्षारसूत्र का तुलनात्मक अध्ययन करना है ।

कार्य योजनान्तर्गत 20 रोगियों का चयन कर 2 वर्गों में विभक्त किया गया । प्रत्येक वर्ग में 10–10 रोगियों पर परीक्षण किया गया । वर्ग 'अ' के रोगियों को स्नुहीक्षीर निर्मित क्षारसूत्र तथा वर्ग 'ब' के रोगियों को उदुम्बर क्षीर निर्मित क्षारसूत्र का प्रयोग करवाया गया ।

परिणामस्वरुप वर्ग 'अ' के रोगियों में अर्शांकुर कटने का समय 3–7 दिन एवं वर्ग 'ब' में 5–10 दिन रहा । व्रणरोपण का समय वर्ग 'अ' में 5–8 दिन तथा वर्ग 'ब' में 4–7 दिन रहा । अतः अर्श रोग की चिकित्सा में स्नुहीक्षीर निर्मित क्षारसूत्र से अर्शांकुर कटने में समय कम लगता है लेकिन व्रणरोपण में समय अधिक लगता है । जबकि उदुम्बर क्षीर निर्मित क्षारसूत्र से अर्शांकुर कटने में समय अधिक लगता है लेकिन व्रणरोपण जल्दी होता है ।

Shalya Tantra - 36

An indigenous approach to manage the Bhagandara (Fistula in Ano) by two step therapy (Ksharsutra and Ropana - Dravya Sutra)

Scholar	:	Dr. Aditya Kumar Singh
Guide	:	Prof. S.S. Sharma
Year	:	2004

The main aim of this thesis is to compare the two step therapy with standard Ksharsutra & to evaluate the efficacy of Ropana dravya based Ksharsutra in the management of Fistula in Ano.

Total number of patients were selected 20 in number & divided in two groups. Control group 'A' treated by standard Ksharsutra (Chakradatta 5/148) and treated group 'B' by standard Ksharsutra for half duration & by Ropana dravya coated Ksharsutra for half duration. Duration of treatment was 4 weeks.

Total average unit cutting time in group A was 7.39 days/cm, while unit cutting time was 8.21 days/cm in group B. Relief in pain, itching, burning sensation, discharge & inflammation were 61.29%, 75%, 67.67%, 74.19%, 75% respectively in group 'A' and relief in above symptoms were 91.67%, 91.66%, 91.18%, 88.57%, 93.10% in group 'B' respectively.

Shalya Tantra - 37

An indegenous approach to manage the Janu Sandhigata Vata (Osteoarthritis of knee joint) by Osteocare Rasayana compound and Knee Traction

Scholar : Dr. Nagendra Mani Dwivedi

Guide : Dr. H.K. Kushwah

Year : 2004

The main aim of this thesis is to evaluate the efficacy of Osteocare Rasayana compound as well as Traction therapy in the management of Osteoarthritis of knee joint.

30 patients were selected for this work dividing in three group A, B & C. A for Osteocare Rasayana compound, B only Traction & C group giving a combined treatment with Osteocare Rasayana compound & Traction.

The drug Osteocare Rasayana compound contains Guggulu, Shilajit, Rasna, Ashwagandha, Shatavari, Bala, Arjuna & Laksha. Osteocare Rasayana compound was given in the dose of 4-6gm t.d.s. with milk for the duration of 28 days.

Overall percentage of improvement was 69.86% in group 'B', 74.39% in group 'A' and 78.72% in group 'C'.

Result shows that group 'C' has a better effect comparative to others with more relief in pain and more flexibility of knee joint.

Shalya Tantra - 38

Evaluation of the efficacy of Kativasti, Electrotherapy & Vatari Guggulu in the management of Katishoola (Lumbago)

Scholar : Dr. Ghanshyam Dhal

Guide : Dr. H.K. Kushwah

Year : 2004

The main aim of this thesis is to study the fundamental of Electrotherapy and to evaluate the efficacy of Vatari Guggulu (Bhaishajya Ratnavali 29/152-153) and Kativasti in Katishoola.

50 patients were selected for this work. They were divided in 5 groups. The first group 'K' treated with Kativasti only, second group 'E' treated with Electrotherapy only. Third group 'D' treated with drug (Vatari Guggulu 3 gm t.d.s. with hot water) only. Fourth group 'ED' treated with Electrotherapy and drug combinely & fifth group 'KD' treated with Kativasti & drug combinely. Duration of treatment was 3 weeks.

The average relief was observed 64.67% in group 'K', 57.93% in group 'E', 64.31% was observed in group 'D', 74.13 in group 'ED' and 86.91% in group 'KD'.

Study shows that Kativasti & drug combinely gives a better result in reducing pain, relief in SLR & tenderness & improvement in walking distance.

Shalya Tantra - 39

Clinical evaluation of Leech application in the management of Burger's disease

Scholar	:	Dr. Arvind Kumar Shakya
Guide	:	Prof. S.S. Sharma
Year	:	2005

The main aim of this thesis work is to observe the response of Leech application in Burger's disease and also to study the ayurvedic principles of Burger's disease.

Number of patients were taken for this work 10. Then patients called for Leech application every week upto two months or until the signs and symptoms of disease subside.

The percentage improvement in various signs and symptoms like intermittent claudication was 54.55%, burning sensation was 60.87%, pain while rest 53.85%, colour change 57.14% and that in temperature was 56.52%.

The average relief in all signs and symptoms in the patients put under trial was 56.59%.

Shalya Tantra - 40

The Clinical study of Sunishannak Changeri Ghrita and Durva Tail in the management of Raktarsha (Bleeding Piles)

Scholar : Dr. Suman Yadav

Guide : Prof. S.S. Sharma

Year : 2005

The main aim of this thesis is to evaluate clinically the efficacy of Sunishannak Changeri Ghrita (Charak Chi. 14/235-242) and Durva Tail (Charak Chi. 25/93) in the management of Raktarsha & also to control bleeding per anum, simultaneously to increase agnibal.

30 patients were selected & divided in 3 groups named A,B,C group. Each group contained 10 patients. Group 'A' patients were treated by Sunishannak Changeri Ghrita 1 TSF (5ml) b.d. orally with lukewarm water. Patients of group 'B' were treated by Durva Tail 5ml b.d. locally P/R. Group 'C' patients were treated by Sunishannak Changeri Ghrita 1 TSF (5ml) b.d. orally along with Durva Tail 5ml b.d. locally. Follow up were taken every week upto 4 weeks.

Result shows that group 'C' containing Sunishannak Changeri Ghrita + Durva Tail combinely given a better result than other group. In agnimandya the relief was 26.31% in group 'A', 5.88% in group 'B' and 66.66% in group 'C'.

Effect on raktasrava lakshana group 'A' showed 4.761 t value, 'B' showed 1.97 t value and group 'C' showed 9.003 t value. So group 'C' showed more significant result than group 'A' & 'B'.

Shalya Tantra - 41

Comparative study of Madhu coated Ksharsutra and standard Ksharsutra in the management of Bhagandara (Fistula in Ano)

Scholar : Dr. Uday Patankar

Guide : Prof. S.S. Sharma

Year : 2005

The main aim of this thesis is to evaluate the efficacy of Madhu coated Ksharsutra (Kalpit) in the management of Fistula in Ano and also to compare the efficacy of Madhu coated Ksharsutra and standard Ksharsutra (Chakradatta 5/148).

20 patients were selected and divided in 2 groups (10 in each) named 'A' and 'B' group. Group 'A' Treated with standard Ksharsutra and Group 'B' was treated with Madhu & Madhuyasthi coated Ksharsutra. The duration of the treatment was till the complete cutting of fistulous track.

Thus for six weeks the average cutting of fistulous track was 0.822 cm in group 'A' and 0.757 cm in group 'B'. The above observation showed that experimental Madhu coated Ksharsutra is more effective than standard Ksharsutra in relation to post ligation side effect. Study shows that healing status & relief in pain, burning sensation, pus discharge, post ligation complication as will as cutting is found enhanced in the experimental Madhu coated Ksharsutra as compared to standard Ksharsutra.

Shalya Tantra - 42

Clinical evaluation of Vicryl 10 & Ksharsutra in the management of Haemorroids under the influence of Deepan Pachan Yog - Suran Modak

Scholar : Dr. Himanshu Verma

Guide : Prof. S.S. Sharma

Year : 2005

The main aim of this thesis is to evaluate the efficacy of Ksharsutra ligation & Vicryl 10 ligation & also to compare the both procedure as well as to reduce the post operative complication.

For this study 20 patients were selected and divided in two groups-10 of each. In group 'A' patients Vicryl 10 is ligated and the observations were noted under the influence of Deepan Pachan Yog - Suran Modak (Sharangdhar M.Khanda 7). In group 'B' patients standard Ksharsutra (Contents : Barbur's 20 no. thread, Snuhiksheer, Apamargkshar & Haridra) is employed and the observations were noted under the influence of Deepan Pachan Yog – Suran Modak. Suran Modak was given in 500 mg t.d.s. to the patients. The duration of follow up was 6 weeks.

A.C.T. of group 'A' is 7.9 days and A.C.T. of group 'B' is 7 days. A.H.T. of group 'A' is 1.9 weeks and A.H.T. of group 'B' is 2.2 weeks. The internal medicinal treatment as an associated complimentary therapy has a very important bearing on the control of precipitation of disease, incidences of recurrences and complications.

Shalya Tantra - 43

Taming the Carcinoma & side effect of Chemotherapy by an indigenous formulation "Tamonco" capsule & syrup

Scholar	:	Dr. Santosh Kumar Mishra
Guide	:	Dr. H.K. Kushwah
Year	:	2005

The main aim of this thesis is to evaluate the efficacy of “Tamonco” capsule & syrup in the patients of Cancer.

No. of patients taken for this work were 20 and divided in two groups named 'A' and 'B'. Group 'A' treated with Chemotherapy/Radiotherapy & group 'B' treated with Chemotherapy/Radiotherapy along with Tamonco capsule & syrup was given. Tamonco cap. & syrup both were kalpit yoga. The main ingredients of Tamonco capsule were Kokilaksha, Tulsi, Haridra and main ingredients of Tamonco syrup were Ashwagandha, Shatawari, Draksha etc. Dose of Tamonco capsule was 3 cap. t.d.s. (750mg per capsule) with water and dose of syrup was 10ml b.d. with water after meal.

It was found that in group 'A' there was 91.58% overall deterioration in various subjective, objective & haematological parameters, on the other hand is group 'B' there was over all 53.16% improvement.